Research Paper | E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 4 | APRIL 2024

भारतीय राजनीति में नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता : एक अध्ययन

मोती लाल नारायण लाल [1]

[1] **सहायक आचार्य (राजनीति विज्ञान), चौधरी खरताराम राजकीय महाविद्यालय भणियाणा पोकरण.**

ABSTRACT:

राजनीति और नीति परस्पर घनिष्ठता से संबंध हैं। इन दोनों को अलग नहीं किया जा सकता अर्थात राजनीति को नीति से और नीति को राजनीति से विभक्त नहीं किया जा सकता। दोनों के अस्तित्व के लिए एक दूसरे की अपेक्षा है या यूं कहें कि, दोनों ही एक दूसरे पर आश्रित हैं तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। कुछ विद्वान तो नीति शास्त्र को मूल तथा राजनीति शास्त्र को उस पर आश्रित मानते हैं। अन्य विद्वान राजनीति शास्त्र को ही मौलिक मानते हैं और नीति शास्त्र को उस पर आश्रित मानते हैं। अस्तु कोई किसी पर भी आश्रित हो लेकिन दोनों एक दूसरे के लिए अपरिहार्य हैं और उपादेय हैं। महान विचारक प्लेटों के अनुसार भी नीति ही राजनीति का मूल है। अरस्तु के अनुसार राजनीति नीति का मूल है। प्लेटो राजनीतिक चिंतन के प्रणेता माने जाते हैं और उनके प्रसिद्ध ग्रंथ दि रिपब्लिक में उन्होंने दार्शनिक शासन का प्रतिपादन किया है। जिसके अनुसार शासक जब सद्गुणी हो तो ही विवेकपूर्ण शासन करता है और तब राज्य में सुशासन स्थापित होता है और शांति बनी रहती है। विवेकी मानव ही न्यायनिष्ठ, सत्य शासन कर सकता है। अतः विवेक संपन्न शासक सद्गुणी कहलाता है। एक विवेकी शासक के अनुसार राज्य तो व्यक्ति का विराट रूप है। यदि राज्य का व्यवहार सद्गुणों के आधार पर संपन्न होगा तो संपूर्ण राज्य व्यवस्थाओं से मण्डित होगा। प्रजा में हर्ष और उल्लास होगा हर ओर व्यक्ति सद्गुणों से युक्त होकर सुख समृद्धि और साधनों की प्राप्ति करेगा। समस्त वातावरण अनुकूलता से युक्त होगा और यह सब कुछ तभी संभव है जब राजनीति नीति से युक्त हो।

वर्तमान समय में राजनीति सुशासन का प्रतीक न होकर छल, कपट और दंभ का धरातल हो गई है। जहां प्रत्येक पदाधिकारी अपने सुख, स्वार्थ, लोभ, मोह और लाभ में लिप्त होकर अपनी प्रजा के हित-अहित सबको न करते हुए आगे बढ़ता चला जाता है। इस सब का मूल कारण यही है कि, राजनीतिक धरातल से नैतिक मूल्यों का ह्रास तेजी से हो रहा है। अब कोई सद्गुणी, शिक्षित, कलावान व्यक्ति राजनीति की ओर कदम नहीं बढ़ाना चाहता और जो राजनीति के अखाड़े में कूदता है उसमें नैतिक मूल्यों का होना कपोल कल्पना मात्र है। वर्तमान में हर एक मानव की यही आकांक्षा है कि, हमारा राष्ट्र निरंतर प्रगति करे, विकास की ओर अग्रसर हो और विश्व में विकसित राष्ट्र के रूप में जाना जाए। लेकिन इस सबके लिए भारतीय राजनीतिक धरातल पर नैतिक मूल्यों का होना अत्यधिक प्रासंगिक है।

KEYWORDS:

भारतीय, राजनीति, नैतिक मूल्य, प्रासंगिकता, वर्तमान, सुशासन, न्यायनिष्ठ।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
28th April 2024	30th April 2024

प्रस्तावना

नैतिकता व्यक्ति के सामाजिक आचार का निर्धारण करती है या नैतिक मानकों के अनुसार सदाचार का मूल्यांकन करती है। सामाजिक मूल्यांकन के लिये मानकों का निर्धारण करना ही नैतिकता व नीतिशास्त्र का एकमात्र प्रयोजन है।'

गांधी जी ने अपने सम्पूर्ण नैतिक दर्शन का निर्माण योग दर्शन द्वारा बताए गए पांच यमों अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह तथा ब्रह्मचर्य के आधार पर ही किया है जिन्हें जैन आचार्यों ने 'पंच महाव्रत' की संज्ञा दी है। इन 'पंच महाव्रतों के अतिरिक्त सर्वधर्मसमभाव, स्वदेशी, शारीरिक श्रम, अभय, अस्वाद तथा अस्पृश्यता निवारण जैसे सिद्धांतों को भी गांधी जी ने आवश्यक व्रतों के रूप में ही स्वीकार किया है। इनमें से चार सिद्धांतों शारीरिक श्रम, स्वदेशी, सर्वधर्मसमभाव तथा अस्पृश्यता निवारण का प्रतिपादन उन्होंने तत्कालीन भारतीय राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक परिस्थितियों को दृष्टि में रखकर ही किया था।

अस्तु नीति और राजनीति दोनों का आपस में अत्यधिक निकट का संबंध है। दोनों एक दूसरे पर आश्रित हैं। प्लेटो के अनुसार नीती राजनीति का तथा अरस्तु के अनुसार राजनीतिक नीति का मूल है। अनेक विचारवेत्ताओं के अनुसार राज्य में सुशासन की स्थापना नैतिक मूल्यों के आधार पर ही की जा सकती है क्योंकि नीति से ही राजनीति का निर्धारण होता है। प्लेटों और अरस्तु के मतानुसार नागरिको के नैतिक जीवन की वृद्धि ही राज्य का उद्देश्य है। इस प्रकार राज्य का उद्देश्य नागरिको का नैतिक कल्याण है जिसमें प्रमुख आचरण सुधार पूर्ण व्यवहार है।

भारतीय राजनीति

भारतवर्ष सम्पूर्ण जगत की प्राचीनतम सभ्यताओं में सर्वअग्रणी सभ्यता व संस्कृति वाला देश है। जहाँ सांस्कृतिक, धार्मिक, दार्शनिक, विविधता देखने को मिलती है। अपनी विशिष्टताओं, विविधताओं व समृद्धियों के कारण ही भारतवर्ष में प्रारंभ से अनेक आक्रमण होते रहे हैं। जिसका मूल कारण राजनीतिक एकता का अभाव तथा आपसी छल, दंभ, द्वेष व फूट थी जो आज भी राजनीति को चारों ओर से घेरे हुए है। इससे सिद्ध होता है कि, इतिहास से हमें बहुत कुछ सीखना चाहिए जो हमने अब तक नहीं सीखा है।

भारत पर अंतिम विदेशी शासन ब्रिटेन का था जिसके अंतर्गत देश ने राजनीतिक एकता प्राप्त की और आधुनिकीकरण की ओर प्रगति की। 1947 में ब्रिटिश शासन समाप्त हो गया परन्तु भारत का दो भागों में विभाजन हो गया और भारत से अलग, मुस्लिम साम्प्रदायिकता की परिणतिस्वरूप, पाकिस्तान की स्थापना हुई।

स्वतंत्रता के साथ भारतवासियों को अपने मनोनुकूल संविधान निर्माण का अवसर प्राप्त हुआ। 26 जनवरी सन् 1950 को भारतीय संविधान लागू हुआ जिसमें नैतिक जीवन मूल्यों की स्थापना की गई। नैतिक मूल्यों को ध्यान में रखकर डॉक्टर अंबेडकर ने कहा- "मैं महसूस करता हूं कि संविधान चाहे कितना भी अच्छा क्यों न हो, यदि वे लोग, जिन्हें संविधान को अमल में लाने का काम सौंपा जाए, खराब निकलें तो निश्चित रूप से संविधान भी खराब सिद्ध होगा। दूसरी ओर, संविधान चाहे कितना भी खराब क्यों न हो, यदि वे लोग, जिन्हें संविधान को अमल में लाने का काम सौंपा जाए, अच्छे हों तो संविधान अच्छा सिद्ध होगा। संविधान पर अमल केवल संविधान के स्वरूप पर निर्भर नहीं करता। संविधान केवल विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका जैसे राज्य के अंगों का प्रावधान कर सकता है। राज्य के उन अंगों का संचालन लोगों पर तथा उनके द्वारा अपनी आकांक्षाओं तथा

अपनी राजनीति की पूर्ति के लिए बनाए जाने वाले राजनीतिक दलों पर निर्भर करता है। कौन कह सकता है कि भारत के लोगों तथा उनके राजनीतिक दलों का व्यवहार कैसा होगा? जातियों तथा संप्रदायों के रूप में हमारे पुराने शत्रुओं के अलावा, विभिन्न तथा परस्पर विरोधी विचारधारा रखने वाले राजनीतिक दल बन जाएंगे। क्या भारतवासी देश को अपने पंथ से ऊपर रखेंगे या पंथ को देश से ऊपर रखेंगे? मैं नहीं जानता। लेकिन यह बात निश्चित है कि यदि राजनीतिक दल अपने पंथ को देश से ऊपर रखेंगे तो हमारी स्वतंत्रता एक बार फिर खतरे में पड़ जाएगी और संभवतया हमेशा के लिए खत्म हो जाए। हम सभी को इस संभाव्य घटना का दृढ़ निश्चय के साथ प्रतिकार करना चाहिए। हमें अपनी आजादी की खून के आखिरी कतरे के साथ रक्षा करने का संकल्प करना चाहिए।"

इस प्रकार भीमराव अंबेडकर के विचार निश्चित रूप से संविधान में व्याप्त नैतिक मूल्यों की महत्ता को उजागर करते हैं। यही कारण है कि, 26 जनवरी, 1950 को भारत के संविधान के श्रीगणेश के बाद भी, इसके वास्तविक अमल, न्यायिक निर्वचन और संवैधानिक संशोधनों के द्वारा इसके निर्माण की प्रक्रिया जारी रही। अच्छे के लिए हो या बुरे के लिए, संविधान का विकास जारी रहा। समय-समय पर जिस-जिस प्रकार और जैसे-जैसे लोगों ने संविधान को चलाया, वैसे ही वैसे उसे नए-नए अर्थ मिलते गए। यह सिलसिला अभी भी जारी है।

राजनीतिक परिदृश्य और नैतिक ह्रास

भारतीय राजनीति का जैसा उद्दाम दृश्य वैदिक काल में देखने को मिलता है आज ठीक उसके विपरीत है। आज भारतीय राजनीति निरंतर नैतिक पतन की ओर गिरती चली जा रही। चारों ओर मूल्यों का ह्रास हो रहा है। नैतिकता, जिसके ह्रास के कारण हमारे राष्ट्रीय स्वास्थ्य पर अत्यधिक बुरा प्रभाव भी पड़ रहा है। जिससे प्रत्येक देश प्रेमी आहत हैं। देश के राजनीतिक दल समान रूप से संसदीय जनतंत्र के सिद्धांत को ताक पर रखकर अपनी सत्ता की सफलता के लिए अनेक प्रकार से जातिवाद, भ्रष्टाचार, दलनीति, प्रतिस्पर्धा आदि को बढ़ावा देते हुए धार्मिक भावनाए जातीय भावनाएँ लोकतंत्र की अखंडता सभी को ताक पर रख के चले जा रहे हैं। आज राजनीतिक वातावरण चारों ओर ईर्ष्या, द्वेष से युक्त है। आज राजनीति दलदल का वह स्वरूप धारण कर चुकी है जिसमे जो एक बार गिरता है नीचे धंसता चला जाता है।

यह निराशाजनक है कि जो राजनीति देश को हर तरह से नुकसान पहुंचा रही है, उससे हमारे राजनेता बेफिक्र नजर आते हैं। ऐसी प्रतिप्रतिक्रियाओं से राजनीतिक परिवेश और जनता रूबरू हुई।

पूर्व काल में डॉ. मनमोहन सिंह की सरकार विश्वासमत जीत गई, लेकिन तब भारत की छवि तहस-नहस हो गई। संसदीय मर्यादा का चीरहरण हुआ, शीलहरण हुआ। संविधान फफकता रहा। उसकी धज्जियां उड़ी। संवाद की जगह हुल्लड़ हुआ। प्रधानमंत्री भी उत्तर भाषण नहीं कर पाए। लोकतंत्र नोटतंत्र बना। रिश्वत के नोट लोकतंत्र के पवित्र मंदिर में लहराए। राजनीतिक दल परत दर परत चरित्रहीनता और दलाली के दलदल में डूबते दिखाई पड़े। परमाणु डील के बहाने ढेर सारी डीलें हुई। लीडर डीलर बने। एक अजब-गजब महाभारत हुआ और दुनिया का सबसे बड़ा संसदीय लोकतंत्र ध्वस्त हो गया। इस महाभारत में कौरव-पांडव एक जैसे थे। दोनों ने सांस्कृतिक मर्यादा की द्रौपदी का वस्त्रहरण किया। महाभारत युद्ध में हुए राष्ट्रीय सर्वनाश से आहत युधिष्ठिर ने कहा था, ''जैसे मांसलोभी कुत्तों की गति होती है वही गति राज्य आसक्ति से हम सबकी भी हुई है। अतः इस मांसतुल्य राज्य का परित्याग करना चाहिए।

लोक प्रतिनिधियों में नैतिक मूल्यों का पतन

लोकप्रतिनिधियों का आचरण एवं नैतिक मूल्य के उच्चादर्श जहाँ एक ओर देश को नई दिशा प्रदान करते हैं वहीं उनका विपरीत आचरण एवं नैतिक मूल्यों का क्षरण उसके विकास को अवरुद्ध करता है एवं राजनीति के लोकतांत्रिक ढाँचे को अघात पहुँचाता है। लोक प्रतिनिधियों के भ्रष्ट कारनामे सामान्य जनता को आश्चर्य चकित कर देते हैं। वास्तव में, जनता का विश्वास उनके ऊपर से इन्हीं कारनामों के कारण उठता जा रहा है। आज धारणा यही है कि सब अपनी-अपनी तिजोरियों को भरने में लगे हुए हैं, किसी को जनता के दुःख-दर्द सुनने या दूर करने में रूचि नहीं है। चोरी हो जाने पर भी क्षतिग्रस्त व्यक्ति प्रायः पुलिस में रिपोर्ट करने से हिचकता है, क्योंकि वह जानता है कि इसमें कोई लाभ नहीं होगा वरन् उलटा परेशान होना पड़ेगा। बख्शी गुलाम मुहम्मद 1953 ई. में जम्मू तथा कश्मीर के मुख्यमंत्री बने थे। उनके भ्रष्ट लोक जीवन के सम्बन्ध में पण्डित प्रेमनाथ बजाज ने लिखा है कि बख्शी' साहब जब राजनीति में आए तब खादी भण्डार में 20 रूपये प्रतिमाह के नौकर थे। उनके पिता और भाई छोटी सी पान की दुकान करते थे। आय का कोई और साधन नहीं था परन्तु आज उनका परिवार कश्मीर घाटी के सर्वाधिक धनाढ्य परिवारों में एक है जिसके पास नकद और अचल सम्पत्ति को मिलाकर लगभग 50 लाख का स्वामित्व है। 1965 ई. में उनके भ्रष्टाचार की जाँच हेतु सरकार ने न्यायाधीश आयंगर को आयोग के रूप में नियुक्त किया।'

आयोग ने पाया कि 1963 ई. में बख्शी साहब के निजी परिवार की सम्पत्ति 34 लाख थी। आखिर दस साल में इतना धन कहाँ से आया ? स्पष्ट है भ्रष्टाचार के माध्यम से ही आया होगा।

सार्वजनिक धन का दुरूपयोग, अपने सगे सम्बन्धियों, मित्रों एवं समर्थकों के लिये रोजगार की व्यवस्था; चुनाव जीतने के लिये शासकीय संयंत्र का किसी उम्मीदवार के लिये प्रयोग और चुनाव जीतने के बाद राजनीतिक मालिक से अनुग्रह प्राप्ति, किसी अधीनस्थ कर्मचारी की गोपनीय रिपोर्ट में अच्छी टिप्पणी देना ताकि वह विभागीय अध्यक्ष के इशारों पर नाच सकें किसी अमुक स्थान पर रहने देने के उद्देश्य से सम्बन्धित अधिकारी को दी गई रिश्वत, सरकारी कर्मचारियों को कुछ भाग देकर सरकार से किसी सौदे की प्राप्ति भ्रष्टाचार के कुछ ढंग हैं जिनकी उत्पत्ति नैतिक मूल्यों के ह्रास का ही परिणाम है।

भारतीय राजनीति में नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता

गांधी युग में स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने, अपने राजनीतिक अनुभवों से नैतिकता तथा व्यक्तिगत जीवन में ईमानदारी और निःस्वार्थ समाज सेवा का पाठ पढ़ा व पढ़ाया था, वह इतिहास के पन्नों में बन्द होता दिखाई दे रहा है क्योंकि अब दुर्भाग्य से देश में ऐसी कोई पाठशाला नहीं है और न ही नैतिकता के आदर्शों पर चलने वाला नेता। इस प्रकार नैतिकता में आई गिरावट एवं भ्रष्टाचार की चुनौती का सामना जनजागृति पैदा करके ही किया जा सकता है।

वर्तमान राजनीति में इसका सशक्त उदाहरण विश्व प्रिय नेता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी हैं। जिन्होंने राजनीति के धरातल पर कदम रखते ही सर्वप्रथम भारतीय संस्कृति, सभ्यता, ज्ञान परिपाटियां, नैतिकता, जीवन मूल्य, जीवन आदर्शों की ओर न केवल दृष्टि डाली, न केवल उसका बखान किया बल्कि अपने कर्म, व्यवहार और संकल्पों से उसका आचरण भी किया। आज चारों ओर संपूर्ण विश्व पुनः भारतीय संस्कृति के वैशिष्ट्य की ओर से प्रेरित हो रहा है। सत्ता प्राप्ति के बाद संविधान के तहत उन्होंने एक ऐसे लोकतंत्र को अपनाया जिसमें मर्यादा, संयम और अनुशासन की व्यवस्था है।

उन्होंने भौतिक मताधिकार के आधार पर सर्वप्रथम चुनाव प्रक्रिया को अनुशासित, व्यवस्थित और निष्पक्ष स्वरूप प्रदान करने के लिए एक व्यक्ति, एक मत के सिद्धांत के अनुसार भारत में लोकतंत्र की स्थापना करने वाले भारतीय संविधान निर्माताओं की दूरदर्शिता की सराहना करते हुए चुनाव प्रक्रिया में व्याप्त भ्रष्टाचार को समाप्त किया। चुनावी प्रक्रिया भारतीय जनता के प्रति विश्वास एवं सम्मान का प्रतीक है। उसका निष्पक्ष होना जनता की भावनाओं का सम्मान है। उन्होंने नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता को अपने व्यवहार के साथ राजनीति के धरातल पर अवस्थित किया है।

आज संपूर्ण विश्व प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी की 'नमो संस्कृति' के प्रति नतमस्तक है। उन्होंने संपूर्ण विश्व को अपनी भारतीय संस्कृति के प्रति नतमस्तक कर दिया। ये सब उनकी धार्मिक, सांस्कृतिक, नैतिक भावनाओं की प्रबलता का प्रतीक है। उनका यह व्यवहार इस बात को चरितार्थ करता है कि, भारतीय राजनीति में नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता का क्या महत्त्व है। इस नैतिकता के बल पर आज उन्होंने संपूर्ण विश्व को स्वयं से जोड़ लिया और संपूर्ण विश्व के विश्वास को जीत लिया है।

भारतीय संविधान संसदीय ढांचे के लोकतंत्र की स्थापना करता है। सच्चा लोकतंत्र संसदीय लोकतंत्र ही हो सकता है जिससे बिना हिंसात्मक क्रांति के सरकार को बदला जा सकता है। वर्तमान में ऐसा अनुभव किया जा रहा है की देश में व्याप्त भ्रष्टाचारियों की जड़ें न केवल हिली हैं बल्कि समूल नष्ट हो गई हैं। अब उनके अनर्गल प्रलाप का जनता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। अब चारों ओर कानून व्यवस्था स्वयं में अत्यधिक सवस्थ वातावरण से युक्त हो गई है। राष्ट्र हिंसात्मक स्थितियों से, उपद्रवों से, लूटमार से, आतंकवाद से मुक्त होता हुआ दिखाई देने लगा है। 2014 से वर्तमान तक के आंकड़ों का परिशीलन करने पर स्पष्ट परिलक्षित होता है कि, देश आज विकास की ओर गति करने लगा है। यह सब एक कुशल नेतृत्व और साथ ही नैतिक नेतृत्व का परिणाम है।

यों तो भारत में सम्प्रभु शक्ति मतदाताओं में निहित है, किन्तु भारत की राजनीति व्यक्ति-प्रधान है। हमारी राजनीति का आधार चमत्कारी नेतृत्व है। अपने करिश्मायी

व्यक्तित्व के कारण जवाहरलाल नेहरू, श्रीमती इन्दिरा गांधी और जयप्रकाश नारायण की भारतीय राजनीति में प्रभावी भूमिका रही है। सन् 1962 की पराजय के बाद भी जनता जवाहरलाल नेहरू को पूजती रही, जून 1975 की ऐतिहासिक भूल के बाद भी जनता श्रीमती गांधी को अपना नेता मानती रही, सम्पूर्ण क्रांति न लाने पर भी जनता जयप्रकाश को दूसरा गांधी कहती है। फरवरी 1998 के लोकसभा चुनावों के अवसर पर श्रीमती सोनिया गांधी लोगों की अपार भीड़ जुटाने में सफल हुई। स्वाधीनता के बाद की पनपी राजनीतिक संस्कृति में नारों और प्रतीकों का विशेष महत्व है। समाजवाद न लाने पर भी वर्षों तक कांग्रेस 'समाजवाद' के नारे के नाम से चुनाव जीतती रही। सन् 1967 के चुनावों में डॉ. लोहिया का 'गैर कांग्रेसवाद' 'कांग्रेस हटाओ देश बचाओ' का नारा काम कर गया। 1971 के चुनावों में गरीबी हटाओं का श्रीमती गांधी का नारा प्रभावी सिद्ध हुआ। मार्च 1977 के चुनावों में जयप्रकाश नारायण ने 'लोकतंत्र बनाम तानाशाही' का नारा दिया। जनवरी 1980 में श्रीमती गांधी का नारा था 'वह सरकार चुनिए जो काम कर सके।' सन् 1989 में राजीव गांधी ने 'राष्ट्रीय एकता खतरे में है' का नारा दिया। सन् 1990 में वी. पी. सिंह ने 'सामाजिक न्याय' का नारा दिया। फरवरी 1998 के चुनावों ने स्थायी सरकार और योग्य प्रधानमंत्री का नारा दिया। दिसम्बर 2002 में संपन्न गुजरात विधानसभा चुनावों में हिन्दुत्व की लहर पर सवार भाजपा ने दो-तिहाई बहुमत हासिल करके लगातार तीसरी बार सरकार बनाने का करिश्मा कर दिखाया।

वर्तमान में पुनः राजनीति में आमूलचूल परिवर्तन हुआ और अब जनता केवल बोलने वालों के साथ नहीं जिनमें कर दिखाने की क्षमता थी उनके साथ खड़ी हुई है। चारों ओर भारत में जनता का विश्वास भाजपा के प्रति वृद्धि को प्राप्त हुआ है जिसका सर्व प्रमुख कारण प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नैतिक, सांस्कृतिक विचारों की श्रृंखला है। उन्होंने सत्ता के विकास के साथ साथ भारत को नैतिकता से, मूल्यों से, आदर्शों से जोड़ा है। उसे अपनी संस्कृति के वैशिष्ट्य को समझाया है, सत्य के मार्ग पर चलना सिखाया है। यही नहीं उन्होंने देशद्रोहियों पर करारा आघात किया है। जिसे देखकर जनता ने उनका पूर्ण समर्थन किया। निश्चित है कि आज जनता राजनीति को नैतिक, चारित्रिक, धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से देखना पसंद करती है अतः वह अपने शासनकर्ता में इन सभी गुणों को खोज रही है और आज इन गुणों की समष्टि जिसके नेतृत्व में है उसी की ओर वो आगे बढ़ रही है। आज भारत ही नहीं विश्व भी नरेंद्र मोदी जी के विचारों का मुरीद है। यदि गूढ़ चिंतन किया जाए तो उनके व्यक्तित्व का आधार नैतिक चारित्रिक जीवन मूल्य हैं जिन्हें उन्होंने सत्ता में आने के बाद भी विस्मृत नहीं होने दिया।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह स्पष्ट है कि भारतीय राजनीति में नैतिक मूल्यों का अवमूल्यन होता आया है। इसे समाप्त कर ही सच्चे लोकतंत्र की रक्षा की जा सकती है इसके लिए आम सहमति को जुटाने की आज आवश्यकता है। आज हमें प्रमुख रूप से जिस राष्ट्रीय एजेण्डे की आवश्यकता है उनमें उच्च परंपराओं तथा नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना और भ्रष्टाचार दूर करने के लिए राजनीतिक, शैक्षिक, औद्योगिक, सरकारी क्षेत्र और सामाजिक व्यवहार के लिए एक आचार संहिता को तैयार करना है। राजनीतिक दलों, उनके नेताओं, सुप्रसिद्ध न्यायविदों, समाजशास्त्रियों, शिक्षाशास्त्रियों, वैज्ञानिकों, उद्योग, वाणिज्य, सहकारिता संगठनों तथा मजदूर संघों के सहयोग से आचार संहिता तैयार करनी होगी। आचार संहिता के पालन से अनुशासन, नैतिक मूल्यों तथा उच्च परम्पराओं की रक्षा की जायेगी।

जिसके लिए कुशल नीति के धारक अपने देश के नेतृत्व को सांस्कृतिक नैतिक स्वरूप से मंडित करने वाले विश्व नेता श्री नरेंद्र मोदी जी की नीतियों को, उनमें छिपे हुए गूढ़ रहस्यों को समझते हुए उनका समर्थन और पालन दोनों ही करना आवश्यक है। वर्तमान विकास की राह उनकी नैतिक राजनीति ही है।

REFERENCES

1. हरिमोहन जैन: भारत शासन और राजनीति, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 2001.

2. धर्मवीर महाजन एवं कमलेश महाजन: भारतीय समाजः मुद्दे एवं समस्याएँ, विवेक प्रकाशन, दिल्ली, 2003.

3. पुखराज जैन: भारतीय शासन एवं राजनीति, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, 2003.

4. सुषमा यादव एवं राम अवतार शर्मा: भारतीय राजनीति, ज्वलंत प्रश्न, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 1997.

5. बिरकेश्वर प्रसाद सिंह: नीतिशास्त्र एवं राजनीतिशास्त्र, ज्ञानवा प्रकाशन, पटना, 1980.

6. के. वेंकटेश्वरम: सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद नई दिल्ली 1978.

7. विश्वनाथ प्रसाद वर्मा: वैदिक राजनीतिशास्त्र, बिहार हिंदी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1975.

8. इकबाल नारायण: राजनीतिशास्त्र के मूल सिद्धान्त, रतन प्रकाशन मंदिर, दिल्ली, 1957.